

साहित्य समाज का धरोहर है। जिस प्रकार समाज में स्थित मनुष्य की वस्तुगत अध्ययन समाजशास्त्र करता है, ठीक उसी प्रकार साहित्यकार समाज में स्थित मनुष्य की गतिविधियों को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। साहित्य और समाज का संबंध एक सिक्के के दोनों पहलुओं की तरह होता है। शिवपूजन सहाय ने 'साहित्य' निबंध में लिखा है, साहित्य समाज की आंतरिक दशा का दिव्य दर्पण है, सभ्यता और संस्कृति का संरक्षक है। वहीं आगे लिखते हैं, किसी राष्ट्र या जाति में संजीवनी शक्ति भरनेवाला साहित्य ही है।

रचनाकार वर्तमान समाज में व्याप्त गतिविधियों को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। कथा सम्राट प्रेमचंद ने अपनी लेखनी से समाज के हरेक वर्गों की पीड़ा को उजागर किया है। कथा साहित्य को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाने में प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ स्थान रहा है। इनके अलावे चंद्रधर शर्मा गुलेरी, जयशंकर प्रसाद, सुदर्शन, यशपाल, अज्ञेय, जैनेन्द्र, उषा प्रियवंदा, मन्नू भंडारी, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, अमरकांत, ओमप्रकाश वाल्मीकि, उदय प्रकाश, ज्ञानरंजन आदि की भी अहम भूमिका रही है।

वर्तमान समाज में व्याप्त किसान-मजदूरों की त्रासदी, व्यक्ति का अकेलापन, घुटन, पलायन, संघर्ष, स्त्री-पुरुष के संबंधों में बिखराव, प्रेम-विवाह, जातिवाद, अतिमहत्वाकांक्षा, भ्रष्टाचार, आत्महत्या और नशाखोरी आदि ज्वलंत समस्याओं को समकालीन हिंदी कहानीकारों ने अपनी कल्पना शक्ति से पिरोने का प्रयास कर रहे हैं।

आज देश में एक ओर बेरोजगारी की समस्या से त्रस्त युवा आत्महत्या करते हैं तो वहीं सरकार की उदासीनता के कारण किसान। आत्महत्या करने की मूल वजहों को समाज के सामने प्रस्तुत करने की पीड़ा, जिस दिन लेखक अपना कर्तव्य समझ लेंगे। उसी दिन आत्महत्या करने की प्रतिशत में निश्चित गिरावट आयेगी। देश के विवश व लाचार वर्ग को अपने हक और अधिकार के लिए आवाज उठाने को प्रेरित करने की आवश्यकता है।

आधुनिक परिवेश में मध्यवर्गीय परिवार इस कदर उच्च वर्ग में शामिल होना चाहते हैं कि वे नाते-रिश्ते, मानवीय-प्रेम, नैतिकता आदि को तिलांजलि देने में तुले हुए हैं। यही कारण है कि आज वृद्धाश्रम में वृद्धों की संख्या में इजाफा हो रहा है।

बहरहाल साहित्यिक पुस्तकों के पठन-पाठन से आज युवा वर्ग विमुख हो रहे हैं। जबकि देश के कई प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं ने पाठकों के लिए प्रकाशित किये जा रहे हैं। युवा वर्ग लेखनी के लिए आगे आने से घबराते नजर आ रहे हैं। हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने विद्यार्थी जीवन से ही साहित्य के पठन-पाठन और अपनी रचनाशीलता से संवेदना का स्रोत को कभी मंद नहीं पड़ने दिया है। हमें, हमेशा साहित्य कर्म में लीन रहना चाहिए। तभी देश और समाज का कल्याण संभव है।

अंत में, मैं अपने शुभचिंतकों, मित्रों, लेखकों, बुद्धिजीवियों व प्राध्यापकों से लेखकीय प्रतिक्रिया की आशा करता हूं।